

कादाहिनाहातलेमिजिदिनुः सोअस्त्रिराजुहो॥ ॥ ॥ ईति
सुकूपदेमाअस्त्रिकोरः पुरुषकोकाममंगलतद्वितवि
वारहो॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ईतिक्षेमपदेमा॥ पुरुषकावाउअंगम
वस्तु॥ अस्त्रिकादाहिनाअंगमावस्तु॥ ॥ १५॥ प्रतिपदाका
दिनमाअस्त्रिकासिरमावस्तु॥ पुरुषकावांउहातलेमि
जिदिनु॥ ॥ ॥ २॥ दुतियाकादितअस्त्रिकादाहिनानेत्रमा
वस्तु॥ पुरुषकावेनुभवजगर्नु॥ अस्त्रिवस्तुहो॥ ॥ ३॥ ॥
त्रितियाकादिनमास्त्रिकामुखमावस्तु॥ पुरुषकामुखलबु
भुवनगर्नु॥ ॥ ॥ ४॥ वैथिकादितः अस्त्रिकागंडस्थलमावस्तु॥

को
३

॥ पुरुषका मुखले तुम्बन गर्नु ॥ अस्त्रि वस्ये हो ॥ ॥ ५ ॥
पंचमिका दिन स्त्रिका गला मावस् ॥ पुरुषका वों उहा
तले कुत्कुत्पाई दिनुः ॥ अस्त्रि वस्ये हो ॥ ॥ ६ ॥ ६ ॥ पस्त्रि
का दिनः अस्त्रिका दाहिना का पा मावस् ॥ पुरुषका वों
महा तले कुत्कुत्पाई दिनुः ॥ अस्त्रि मोहन हो ॥ ॥ ७ ॥ स
प्रमिका दिनः स्त्रिका दाहिना हात मावस् ॥ पुरुषका वों
उहा तले मर्दन गर्नु ॥ ॥ ८ ॥ अष्टमिका दिनः अस्त्रिका दा
द मावस् ॥ पुरुषले अंगालोहा लिखाति जोरि अस्तन म
र्दन गर्नु ॥ स्व अस्त्रि वस्ये हो ॥ ॥ ९ ॥ नवमिका दिनः अ

राम
३